वर्ष 29 अंक 47
पृष्ठ 22+4+4 =30
बरेली, रविवार
29 अक्टूबर 2017
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 5.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

PAGE NO. 9 : MIDDLE

चिकित्सा जगत के नए शोधों को किया साझा

एसआरएमएस में अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में जुटे विशेषज्ञ, दूसरे दिन का उद्घाटन देवमूर्ति ने किया

जागरण संवाददाता, बरेली : श्री राममूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के जनरल मेडिसिन विभाग एवं एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन के सहयोग से चल रही अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस के दूसरे दिन का उद्घाटन संस्थान के चेयरमैन देव मूर्ति ने किया।

उन्होंने कहा कि संस्थान सदैव से ही चिकित्सा जगत में हो रहे नवीन अनुसंधानों की जानकारी चिकित्सकों तक पहुंचाता रहा है। फोर्टिस अस्पताल, नई दिल्ली से आए डा. विमलेश पांडे ने रूयूमेटिड आर्थाराईटिस (संधिवात) जैसी गंभीर बीमारी की जानकारी दी। उसकी पहचान, नुकसान और उपचार के बारे में बताया। केजीएमयू लखनऊ के डा. राजीव गर्ग ने सांस के मरीजों में और ओब्सट्रेक्टिस सीप एप्निया में नॉन इनवेजिव वैन्टीलेशन के प्रयोग के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। जेपी हॉस्पिटल नोएडा के डा. ज्ञानेंद्र अग्रवाल ने सेप्सिस की नई परिभाषा और उसके महत्व को बताया। लखनऊ के डा. अशोक चंद्र ने मरीज के निदान और इलाज के लिए नए सिरे से मरीज के प्रति डाक्टर की एप्रोच के बारे में बताया।

इस संदर्भ में लिखी पुस्तक यूजी एवं पीजी छात्रों को उपलब्ध कराई। इस अवसर पर एक सोविनियर का भी विमोचन किया गया। इस दौरान संस्थान के प्रशासनिक निदेशक आदित्य मूर्ति, प्राचार्य डा. आरसी पुरोहित, सचिव, यूपी चैप्टर एपीआइ डा. डी. हिमांशु, कांफ्रेंस की आयोजक चेयरपर्सन डा. निर्मल यादव समेत अन्य मौजूद रहे।

एसआरएमएस में आयोजित अंतर राष्ट्रीय कांफ्रेंस में अतिथियों ने सोविनियर का विमोचन किया • जागरण

जीनथेरेपी से खोजा जा रहा एचआइवी का इलाज

जागरण संवाददाता, बरेली : विश्व के नक्शे पर अमेरिका चूं ही नहीं विकसित हो गया, वहां हर क्षेत्र में आए दिन बड़े शोध हो रहे हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में वहां के वैज्ञानिक जीन एडिटिंग में सफलता हासिल कर चुके हैं। इससे ब्लड कैंसर जैसी असाध्य बीमारी पर काबू पाया गया है। अब एचआइवी जैसी खतरनाक बीमारी का इलाज भी जीन थेरेपी के द्वारा खोजा जा रहा है। इस तरह के शोध में अपना देश अभी काफी पीछे है।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के मेडिसिन विभाग के हेड प्रो. केके गुप्ता ने स्वास्थ्य जगत की नई जानकारियों से रूबरू कराया। वह एसआरएमएस के आयोजित अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में आए थे। बताया कि अमेरिका की एक कंपनी ने कैसपर जीन बनाकर उससे कैल-टी नाम की दवा बनाई है। यूएस एफडीए ने इसे अप्रूव किया है, जिसका नाम लिविंग ड्रग रखा है। इस दवा का इस्तेमाल बोस्टन और बर्लिन नामक दो ब्लड कैंसर के मरीजों पर किया गया। तीन माह की दवा देने के बाद दोनों की बीमारी दूर हो गई।

इसी कैसपर जीन से अब एचआइवी का इलाज खोजा जा रहा है। यह शोध पूरा होने पर चिकित्सा जगत के लिए वरदान साबित होगा। अपने देश में भी कई शोध हो रहे हैं, बावजूद हम अभी काफी पीछे हैं। प्रो. गुप्ता ने बताया कि जीन थेरेपी में किसी भी मरीज से उसकी डिजीज सेल को लिया जाता है। फिर उस सेल को कैसपर जीन से एडिट करते हैं। जीन एडिटिंग के बाद उस सेल को दोबारा मरीज में लगा देते हैं। यह सेल शरीर में पहुंचकर डिफैक्टिव सेल्स को टारगेट करके मार देता है।

लगातार दूसरे साल डेंगू होना खतरनाक

बरेली : प्रो. केके गुप्ता ने बताया कि डेंगू भी अन्य वायरल फीवर की तरह है। हर मरीज को प्लेटलेट्स चढ़ाने की जरूरत नहीं होती। डेंगू वायरस के चार स्ट्रेन होते हैं और हर बार यह रूप बदलकर सामने आता है। अगर किसी को लगातार दूसरे साल भी डेंगू हो जाता है तो यह खतरनाक साबित हो सकता है। डेंगू के मरीज की हालत अगर स्थिर हो तो उसे 48 घंटे बाद डिस्चार्ज किया जा सकता है। हृदय रोगियों को अगर डेंगू हो जाए तो उन्हें दिल की दवाएं रोक देनी चाहिए। डेंगू एक स्वस्थ बच्चे के मुकाबले कुपोषण के शिकार बच्चों को कम होता है। अब तक इस बीमारी की कोई सफल वैक्सीन नहीं बन पाई है।

हार्ट फेलियर बन रहा मौत का बड़ा कारण

जासं, बरेली : सांस फूल रही है, धड़कनें तेज हैं और पैरों में सूजन भी आ रही है। ऐसे में मरीज लापरवाही कतई नहीं बरतें, तुरंत इलाज करवाएं। ऐसे हालात में हार्ट फेल हो सकता है। विश्व में हार्ट अटैक, स्ट्रोक और कैंसर के बाद हार्ट फेलियर चौथी बड़ी बीमारी है जिससे लोगों की मौत हो रही है। इससे बचने के लिए लाइफ स्टाइल बदलना होगा। इंग्लैंड के चेस्ट स्पेशियलिस्ट डा. राज चंद्रप्पा ने यह बातें कही। उन्होंने बताया कि बदलते लाइफ स्टाइल, बढ़ता वजन, नमक का अधिक सेवन, धूमपान, शराब के सेवन के कारण हार्ट की बीमारी बढ़ती जा रही। शुरुआती बचाव ही बेहतर उपचार है। बाद के उपचार में दवाएं, पेसमेकर लगाना, ट्रांसप्लांट ही विकल्प बचता है। उन्होंने बताया कि शरीर में नमक की कमी भी कई बीमारियों को पैदा कर सकती है। इसके लिए जरूरी है कि सुस्ती आना, उल्टी होना, पेशाब कम-ज्यादा होना, दौरे आए तो सोडियम का टेस्ट कराना चाहिए।

बीमारियों से ग्रसित कर देगा फैटी लीवर

बरेली : ऐसा नहीं है कि सिर्फ शराब पीने वालों के लीवर में ही चर्बी चढ़ रही है। कई ऐसे लोगों के लीवर भी बढ़ रहे हैं जो शराब का सेवन नहीं करते। इसमें अगर मोटापा और मधुमेह भी उस व्यक्ति को हो तो खतरा कई गुना बढ़ जाता है। इससे कई तरह की बीमारियां उसे घेर सकती हैं।

यूपी एसोसिएशन ऑफ फिजीशियन ऑफ इंडिया की अध्यक्ष डा. सरिता बजाज ने यह बातें कही। वे एसआरएमएस में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में शामिल थीं। उन्होंने बताया कि शराब नहीं पीने वाले का लीवर फैटी होने के साथ ही मोटापा व डायबिटीज होने पर मरीज को सतर्क हो जाना चाहिए। उसे तुरंत अपना लाइफ स्टाइल बदलना पड़ेगा। आराम की आदत छोड़कर एक्सरसाइज करनी होगी। ऐसा नहीं करने पर उस व्यक्ति को दिल, किडनी समेत गंभीर बीमारी हो सकती है।

इतना ही नहीं करीब दस फीसद केस लीवर सिरोसिस के और करीब दो फीसद मामले कैंसर के भी पहुंच जाते हैं। इसका उपचार सिर्फ लाइफ स्टाइल बदलना, कोलोस्ट्रोल व मधुमेह कम करने वाले दवाएं हैं।